कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

पंच तत्वों के सृजन से,
सृष्टि के निर्माण का दिन।
पवन-जल-कण के मिलन से,
प्राण के संचार का दिन।।
प्राणमय प्राणी के मुख से,
ओम् ध्वनि उच्चार का दिन।
सृजित ग्रह-नक्षत्र गति से,
काल गणना का प्रथम दिन।।

हिन्दू नववर्ष २०८२

वार्षिक उत्सव 2025 की झलकियाँ

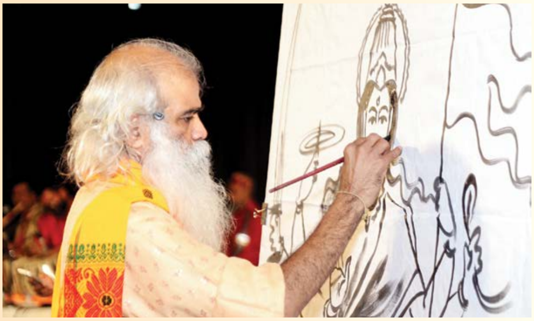

वार्षिकोत्सव की बेला में, बाबा मौर्य हुये शरीक; खींचा अपनी तूलिका से, रानी दुर्गावती का चित्र।
जितना सुंदर चित्रण था, उतना ही सुंदर था विवरण; रानी माँ के स्मरण में डूबा, सभागार का इक-इक जन।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष 36, अंक 1

जनवरी-मार्च 2025 (विक्रम संवत् 2082)

–: सम्पादक :–

स्नेहलता बैद

-:सह सम्पादक:-

डॉ. रंजना त्रिपाठी

–: सम्पादन सहयोग :–

तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कार्यालय :

29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट

(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)

कोलकाता - 6

दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :

24/25, डबसन लेन

1 तल्ला, हावड़ा - 1

दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–

संजय रस्तोगी

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Sanjay Rastogi, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Innovations Pvt Ltd, 113 Park Street, Kolkata - 700016. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- नव संवत्सर पर सांस्कृतिक... 2
- स्वर्गीय बसंतराव भट्ट छात्रावास... 3
- कविता ... नव संवत्सर के ... 5
- मल्लारपुर छात्रावास - वीरभूम 6
- महानगर कार्यकर्ताओं के... 7
- रावतोड़ा कल्याण आश्रम... 8
- अनुकरणीय 9
- वनवासी संस्कार सनातन का... 10
- प्रीतिलता छात्रावास 11
- जन-पर्व मकर संक्रांति... 14
- शैक्षिक भ्रमण का अभिनंदन 15
- बोधकथा.... सोच की ताकत 16
- कविता ... नूतन संवत्सर का... 16

संपादकीय...

नव संवत्सर पर सांस्कृतिक निष्ठा जगाने के लिये संकल्पित हों

चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से विक्रम संवत 2082 का शुभारंभ हो गया है। यह समय प्राकृतिक रूप से नए जीवन के संचार का प्रतीक है। बसंत ऋतु अपने शिखर की ओर बढ़ने लगती है और प्रकृति अपने पूर्ण यौवन पर। भारतीय पंचांग खगोलीय गणनाओं पर आधारित एक अद्वितीय प्रणाली है। यह प्रकृति और मानव जीवन के बीच संतुलन स्थापित करती है। वर्ष में 12 महीने और सप्ताह में 7 दिन रखने का चलन विक्रम संवत् से ही प्रारंभ हुआ। उज्जैयिनी के सम्राट विक्रमादित्य ने आततायी शकों को परास्त कर आज के ही दिन विजय श्री का वरण किया था। उनके विजयोत्सव की स्मृति में विक्रम संवत की 57 ईसा पूर्व में शुरुआत हुई। जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत हिंदू धर्म के सभी मंगल कार्य, पूजा-पाठ अनुष्ठान यज्ञ का विचार इसी पंचांग के द्वारा निर्धारित और पालित होता है। हमारे सारे त्योहारों का निर्णय भी इसी वर्ष, मास, दिन, तिथि के आधार पर होता है। कहा जा सकता है कि काल गणना के क्षेत्र में हमारा चिंतन अग्रणी रहा है। उसमें वैज्ञानिकता भी है, व्यवहारिकता भी है और लोकमंगल की भावना भी अनुस्यूत है। विक्रम संवत केवल सामाजिक पर्व नहीं बल्कि यह आत्मनिर्भरता, सामाजिक समरसता, सौहार्द और राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक भी है। यह हमारी सर्वभूत क्षेमकारी संस्कृति का जीवंत प्रमाण है। संस्कृति किसी राष्ट्र की आत्मा होती है और हिंदू नव वर्ष हमें अपनी जड़ों की ओर लौटने की प्रेरणा देता है। यह भारतीय संस्कृति और विज्ञान का अद्वितीय उदाहरण है जो हमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने की शिक्षा देता है। हम सब का दायित्व है कि पूरे समाज विशेष कर नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति की गरिमा और महिमा से परिचित करायें। पश्चिम के प्रति बढ़ते आकर्षण ने भारतीय समाज में अपनी परंपराओं के प्रति उपेक्षा और अवहेलना का जो भाव पैदा किया है उस धुंध को मिटाने की आज सर्वाधिक आवश्यकता है क्योंकि लोग आधुनिकीकरण की होड़ में अपनी संस्कृति और संस्कारों से दूर होते जा रहे हैं। हमें स्वभाषा,स्वभूषा और स्वदेश के प्रति असंदिग्ध निष्ठा होनी चाहिए। अपनी परंपरा के उज्ज्वल पक्षों पर निश्चित रूप से स्वाभिमान की प्रतीति होती रहनी चाहिए। संस्कृति ही किसी देश की आत्मा होती है और यह नव वर्ष हमें अपनी जड़ों की ओर लौटने की प्रेरणा देता है। जो व्यक्ति अपनी संस्कृति और परंपराओं को भूल जाता है; वह अपनी पहचान खो देता है। हिंदू नव वर्ष एक ऐसा अवसर है जब हम अपनी प्राचीन विरासत को याद कर सकते हैं और नए संकल्प ले सकते हैं। अपनी परंपरा के प्रेरक प्रसंगों और भारतीय संस्कृति की सुवास को जन-जन तक पहुँचाए। नई पीढ़ी के मन में भारत और भारतीयता के प्रति गौरव बोध जागृत हो।

अपनी सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति निष्ठा जागृत कर ही हम अपना खोया हुआ गौरव पुन: हासिल कर सकेंगे। कल्याण आश्रम के सभी कार्यकर्ताओं को हिन्दू नव वर्ष विक्रम् संवत् 2082 एवं श्री रामनवमी की हार्दिक शुभकामना। इति शुभम्।

- स्नेहलता बैद

स्वर्गीय बसंतराव भट्ट छात्रावास, बागमुंडी, पुरुलिया

- नरेन्द्र बसेरा

1977 का वर्ष कल्याण आश्रम की स्थापना की 25वीं वर्षगांठ थी। भले ही 25 साल पूरे होने का अपना महत्व हो, उस समय देश में इमरजेंसी हटने और लोकतंत्र की बहाली के कारण यह साल खास बन गया था। इसी साल, केंद्र और राज्य सरकारों में कांग्रेस के तानाशाही शासन का अंत हुआ और देशभर में लोकतंत्र की जीत का जश्न मनाया गया। इस दौरान कल्याण आश्रम ने भी अपनी सेवाओं को नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ाने का फैसला किया।

कल्याण आश्रम का उद्देश्य था देशभर में अपने सेवा कार्यों को फैलाना और इसके लिए विभिन्न राज्यों में समाज के प्रमुख व्यक्तियों से संपर्क करना। यह काम सबसे चुनौतीपूर्ण था पश्चिम बंगाल और उत्तर-पूर्वी राज्यों जैसे असम, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, और मणिपुर में, जहाँ पर विदेशी मसीही मिशनरियों का प्रभाव बहुत अधिक था। ये मिशनरी इन क्षेत्रों में लोगों को अपने धर्म में परिवर्तित कर रहे थे। इस चुनौतीपूर्ण काम का जिम्मा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

के पश्चिम बंगाल शाखा के पूर्व प्रचारक, स्वर्गीय बसंतराव भट्ट को दिया गया।

स्वर्गीय बसंतराव ने पुरुलिया जिले के बागमुंडी में एक छात्रावास शुरू करने की योजना बनाई, ताकि अयोध्या पर्वत क्षेत्र के जनजातीय बच्चों को शिक्षा मिल सके। एक दिन बागमुंडी के अयोध्या मोड़ पर खड़े होकर उन्होंने संकर नाम के एक छात्र से मुलाकात की। संकर एक सरकारी जूनियर स्कूल में पढ़ता था। बसंतराव ने वहाँ के प्रधानाध्यापक, स्वर्गीय मनोहर कोईरा से मुलाकात की और उनसे सलाह लेने के बाद श्री नारायण गांगुली के साथ चर्चा की। इसके बाद उन्होंने अयोध्या प्राथमिक विद्यालय के प्रधान शिक्षक, स्वर्गीय कृतिवास महातो के अस्थाई निवास पर छात्रावास शुरू करने का निर्णय लिया। कृतिवास महातो ने खुशी-खुशी इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और कहा कि वह इस नेक काम में हर संभव मदद करेंगे।

धीरे-धीरे बसंतराव ने स्थानीय ग्रामीणों और शिक्षकों के सहयोग से इस छात्रावास को एक मजबूत संस्था में बदल दिया। वर्ष 1978 में मकर संक्रांति के अवसर पर बागमुंडी छात्रावास का औपचारिक शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर कई प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। यहाँ के छात्रों ने अपनी पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, जिससे स्कूल और आसपास के लोग हैरान रह गए।

वर्ष 1983 में इस छात्रावास के एक छात्र ने पहली

बार माध्यमिक परीक्षा पास की, जो इस क्षेत्र के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी। इससे पहले अयोध्या पर्वत क्षेत्र के जनजातीय बच्चों के लिए माध्यमिक शिक्षा का स्तर बहुत कम था। कल्याण आश्रम ने न केवल बच्चों को शिक्षित किया, बल्कि उन्हें मसीही मिशनरियों के प्रभाव से भी बचाया।

समय के साथ, छात्रावास में छात्रों की संख्या बढ़ती गई, और अपने भवन का निर्माण करने के लिए जमीन की जरूरत महसूस हुई। इस उद्देश्य के लिए, बसंतराव ने कोलकाता के राधेश्याम चौधरी और मेदिनीपुर के वकील ब्रजन कुंडु से बात की। राधेश्याम चौधरी और उनकी पत्नी गीता देवी ने जमीन खरीद कर कल्याण आश्रम को दान कर दी। बाद में, छात्रावास का निर्माण कार्य शुरू हुआ। वर्तमान में, बागमुंडी छात्रावास के पास लगभग 16 बीघा जमीन है।

बागमुंडी छात्रावास 2024 में 45 वर्ष पूरे कर चुका है। इस लंबी अवधि में कई कार्यकर्ता और शुभचिंतक इस आश्रम में जुड़े और इसके लिए काम किया। इस समय, छात्रावास में कुल 43 छात्र हैं, जो अलग-अलग कक्षाओं में पढ़ रहे हैं।

यह क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण एक पर्यटन केंद्र भी है। स्थानीय समुदाय की इच्छा है कि यहां 60-70 छात्रों के लिए और एक बड़ा भवन बनाया जाए, ताकि अधिक छात्रों को शिक्षा दी जा सके। 2024 में सरस्वती पूजा के दिन नए तीन मंजिला भवन का उद्घाटन किया गया, जिसमें उत्तर बंगाल की प्रमुख समाजसेवी श्रीमती कमली सोरेन, राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता दुखा माझी, और कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस दिन छात्रावास का नाम स्वर्गीय बसंतराव भट्ट छात्रावास रखा गया।

आज तक, इस छात्रावास से 203 छात्र शिक्षा प्राप्त करके निकले हैं, जिनमें से 51 विभिन्न सरकारी विभागों में कार्यरत हैं, और कुछ तो स्वयंसेवा कार्यकर्ता के रूप में जुड़े हुए हैं। अयोध्या पर्वत के जनजातीय समाज में शिक्षा का दीप सबसे पहले इसी कल्याण आश्रम ने जलाया था। अगर यह छात्रावास न होता, तो शायद यहां का जनजातीय समाज मसीही मिशनरियों के प्रभाव में धर्मांतरण कर चुका होता।

वर्तमान छात्रावास समिति में विभिन्न पदाधिकारी और सदस्य हैं, जो छात्रावास को सफल बनाने में अपना योगदान दे रहे हैं।

अनुवादक :

नीलिमा सिन्हा, हावड़ा महानगर सह-महिला प्रमुख ■

कविता ...

नव संवत्सर के अवसर पर

- लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्खी दा'

भारत के ऋषि-मुनि-वैज्ञानिक,
रखते ध्यान प्रकृति का।
ग्रह-नक्षत्र-पृथ्वी की गति से,
ज्ञान काल-गणना का।।ध्रु।।

ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचायी,
जो ब्रह्मांड कहाया।
रचकर नभ-जल-पवन-अनल-कण,
पंचतत्व विकसाया।।
पंचतत्व से निर्मित तन में,
श्रेष्ठ मान दिलवाया।।1।।
भारत के ऋषि-मुनि-वैज्ञानिक....

मानव में नर-नारी-किन्नर,
प्राणि-जगत बहु-काया।
वनस्पति में स्थापित कर दी,
फल-फूलों की माया।।
सूर्य-चंद्र-ग्रह-नक्षत्रों से,
खगोल शास्त्र रचाया।
पृथ्वी-राशि-तारों ने मिल कर,
भू-मंडल रचवाया।।2।।
भारत के ऋषि-मुनि-वैज्ञानिक.......

प्रकृति-धर्म है प्राणि-जगत का,
पालन पोषण करना।
वर्षा-शीत-ग्रीष्म के क्रम से,
करदी ऋतु-संरचना।
पूनम और अमावस मिलकर,
करते मासिक गणना।।
सूर्य, चंद्र की गति से होती,
सूक्ष्म काल की गणना।।3।।
भारत के ऋषि-मुनि वैज्ञानिक.....

सूक्ष्म काल-गणना के खातिर,
करी सूक्ष्म की यात्रा।
सात दिवस, सप्ताह कहाया,
दिवस, रात और दिन का।
अष्ट प्रहर में दिवस बट गया,
था चौबीस घंटों का।
घंटे मिनट-क्षणों में बंट गए,
हिसाब है पल-पल का।।4।।
भारत के ऋषि-मुनि वैज्ञानिक.....

सूर्य-गति और चंद्र-गति में,
है अंतर बहुतेरा।
अगणित ग्रह-नक्षत्र संचलित,
स्थिर केवल ध्रुव तारा।।
इस स्थिरता का लिया सहारा,
तालमेल बिठलाया।
तीन वर्ष में अधिक मास को,
इसीलिए जुड़वाया।।5।।
भारत के ऋषि-मुनि वैज्ञानिक....

नव संवत्सर के अवसर पर,
पूजन हो प्रकृति का।
जिसके उर में छुपा हुआ है,
रहस्य काल गणना का।।
तीन वर्ष के अंतराल में,
अधिक मास है आता।
साठ वर्ष के अंतराल में
केवल एक दिन बढ़ता।।6।।
भारत के ऋषि-मुनि वैज्ञानिक.....

मल्लारपुर छात्रावास - वीरभूम

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम एक सामाजिक संगठन है, जो विभिन्न क्षेत्रों में जंगलों और पहाड़ियों में बसे लगभग 10 करोड़ जनजातियों के सर्वांगीण विकास के लिए पूरे भारत में निःस्वार्थ भाव से कार्य कर रहा है। अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना 1952 में मध्य प्रदेश के जशपुर में हुई थी, जबकि बंगाल में इसका कार्य 1978 में बागमुंडी में कुछ छात्रों के साथ अयोध्या पहाड़ में शुरू हुआ। प्रमुख समाजसेवी स्वर्गीय कृतिबास महतो के घर में इस कार्य की शुरुआत हुई थी। संभवतः मार्च या अप्रैल में स्वर्गीय बसंत दा और नवकुमार सरकार ने पहले छात्रावास के माध्यम से कल्याण आश्रम के कार्य की नींव रखी।

इसके बाद, यह कार्य अलग-अलग जिलों में फैलता गया। बीरभूम जिले में 1979-80 में मामला गाँव में सितंबर के महीने में स्व. बसंत दा, नव दा, और मदन दा के नेतृत्व में इस कार्य की शुरुआत हुई। उस समय, मामला क्षेत्र भी प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध और लाल मिट्टी का इलाका था। शुरुआती छात्रों में विशेष रूप से बाउल हांसदा का नाम उल्लेखनीय है, जो बाद में पूर्णकालिक कार्यकर्ता बने।

अगले वर्ष 1981 में, मल्लारपुर के फतेपुर चासी पाड़ा में साधु दा (गौड़ गोपाल मंडल) के घर पर छात्रावास स्थानांतरित हुआ। उस समय के छात्रों में देवीलाल मंडी, पॉल दा, सत्येंद्रनाथ मुरमु, और नरेंद्रनाथ मंडल के नाम उल्लेखनीय हैं। 1982 में, मल्लारपुर निमतला में प्रमुख स्वयंसेवक साधु दा और बाबू दा (सच्चिदानंद घोष) ने लगभग बीस छात्रों के साथ मिलकर देशभक्ति और मानव सेवा की भावना जागरूक करने का काम शुरू किया। 1983 में छात्रों में बाउल हांसदा, महेश्वर हाजरा, बदिश्वर सोरेन, सीताराम सोरेन, राजेंद्र सुनी, हलधर हांसदा, लाल शारील, समर टुडु, दिलीप मोरा, सुनील सोरेन, राजेंद्र प्रसाद हांसदा, कांडन बेसरा, धनपति हाजरा और उकिल मंडी शामिल थे।

1984 में, राजेंद्र प्रसाद हांसदा और धनपति हांसदा प्रमुख कार्यकर्ता थे, जबकि विश्वनाथ दत्त, देवाशीष चक्रवर्ती, त्रिपुरा श्यामल बागची जैसे प्रमुख व्यक्ति इस कार्य में सक्रिय रहे। 1988 में, पुरुलिया से जदुनाथ टुडु इस कार्य में शामिल हुए। उस समय के छात्रों में नरेन बेसरा, आकाल बेसरा, हिसाब सोरेन, रूपलाल मंडी, चुनाराम मुर्मु, मतीलाल मुरमु, और नवीन मंडी शामिल थे, जो 1994 तक छात्रावास में रहे।

अनंतलाल मोहता, जिला सचिव और वी. डेवलपमेंट जैसे कार्यकर्ता भी इस कार्य में शामिल थे। आशिष दास, शांति दा, स्वपन दा, तुलु दा, साधु दा (गौड़ गोपाल दा), कल्याण दा और अजीत चटर्जी के नेतृत्व में 1995 के अंत में छात्रावास के निर्माण का काम पूरा हुआ और इसे स्थायी रूप से वर्तमान भवन में स्थानांतरित कर दिया गया।

इस समय में बीरभूम, बर्धमान, और मुर्शिदाबाद के छात्रों ने छात्रावास में आना शुरू किया। स्थान की कमी के कारण 30 से अधिक छात्रों को नहीं लिया जा सका। वर्तमान छात्रावास के भूमि दाता शांति

मंडल (शांति दा) एक जिला अध्यक्ष थे। सच्चिदानंद घोष (बाबू दा) और सनद चटर्जी ने 1984 से 1995 तक अध्यक्ष के रूप में सेवा दी। जगन्नाथ सिंह और काली दा के सहयोग से यह कार्य आगे बढ़ा।

थाना समिति के अध्यक्ष माननीय सनद मंडल, सचिव अजीत चटर्जी और कोषाध्यक्ष निमाई शर्मा थे, जो कल्याण आश्रम के कार्यों में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे थे। पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं में आशिष दा, नव कुमार प्रमाणिक, ब्रह्मदेव सोरेन भी शामिल थे।

प्रमुख घटनाएँ

2000 में बीरभूम के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्य शुरू हुआ, जहाँ नावों के माध्यम से ग्रामीणों तक राहत सामग्री पहुँचाई गई। 2006 में, रामपुरहाट थाने के जम कंदर गाँव में गर्मियों में आग लगने से प्रभावित लोगों को दो महीनों तक भोजन, कपड़े, और अन्य आवश्यक सामग्री प्रदान की गई।

सरकारी सेवा में लगे छात्र

राजेंद्र प्रसाद हाजदा - शिक्षक

नवीन माझी - शिक्षक

बुद्धिस्वर हांसदा - शिक्षक

नेतान टुडु - शिक्षक

महेश्वर मंडी - शिक्षक

मुंसीराम हेम्ब्रम - शिक्षक

सकाल बेसरा - CISF

सुनील सोरेन - कार्यकर्ता

संदीप सोरेन - सिविल इंजीनियर, बैरकपुर

तपन हांसदा - WB PO

सुनील हेम्ब्रम - WB PO

बाबू नाथ हेम्ब्रम - WB PO

जगन्नाथ हाजदा - WB PO

लक्ष्मी राम टुडु - WB PO

ईश्वर करा - BLOCK INDIAN

अजय मंडी - इंडियन एयरलाइन्स

अनुवादक :

संजय बोस, हावड़ा महानगर संघचालक ■

महानगर कार्यकर्ताओं के सौजन्य से 61 वनवासी जोड़ों का सामूहिक विवाह संपन्न

कई जनजातीय जोड़े आर्थिक अभाव के कारण पारम्परिक रीति से विवाह तथा उत्सव-भोज का आयोजन नहीं कर पाते और विवाहित होते हुए भी सामाजिक मान्यता से वंचित रहते हैं। उनका परिवार किसी सामाजिक उत्सव में सम्मिलित नहीं हो सकता। यहाँ तक कि उनके श्राद्ध-कर्म में भी समाज सम्मिलित नहीं होता। कई बार ऐसे जोड़े तथा उनका परिवार विधर्मियों के प्रलोभन में आकर धर्म-परिवर्तन कर लेता है। 15 दिसंबर 2024 को मल्लारपुर में कोलकाता महानगर के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री कमल जी पगारिया, श्री विवेक चिरानिया एवं श्रीमती उमा सुराना के सौजन्य से 61 जोड़ों के सामूहिक विवाहोत्सव के आयोजन द्वारा उनके परिवारों को जनजातीय परम्पराओं से जोड़ने एवं उन्हें समाज में पुर्नस्थापित करने का कार्य सम्पादित हुआ।

रावतोड़ा कल्याण आश्रम का इतिहास
जगदेव राम उरांव छात्रावास

- बिष्णु चरण माइति

वनवासी धर्म और संस्कृति और परम्परा को सुरक्षित रखते हुए, वनवासी समाज का सर्वांगीण विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना मध्यप्रदेश अधुना छत्तीसगढ के यशपुर में सन 1952 में हुई। पश्चिम बंगाल में उसी ध्येय को ध्यान में रखते हुए सन 1978 में पुरूलिया के बागमुण्डी में जगदेव राम उरांव छात्रावास से बनवासी कल्याण आश्रम का शुभारंभ हुआ। बंगाल में इसका कार्यभार पूर्णकालीन कार्यकर्ता स्वर्गीय बसंतराव भट्ट को सौंपा गया था। बागमुण्डी में आश्रम का कार्य प्रारंभ होते ही धीरे-धीरे बलरामपुर, बान्दवान और कुमारी तक फैल गया। बांकुड़ा जिला का सीमांत रानीबांध थाना वर्तमान में बारिकुल थाना के झिलिमिलि के नजदीक रावतोड़ा गांव के स्थानीय प्राथमिक शिक्षक माननीय रंजीत सीट के नेतृत्व में बांकुड़ा जिला में कल्याण आश्रम का शुभारंभ हुआ। शुरूआत में रावतोड़ा निवासी नवीन कुमार मण्डल के सहयोग से वनवासी छात्रों को लेकर छात्रावास की शुरूआत हुई। वह घर धीरेन्द्र नाथ मण्डल और हीरालाल मण्डल का था। तीन कमरे का वह घर छात्रावास में बदल गया। छात्र और कार्यकर्त्ता साथ-साथ रहते थे। बसन्त बाबू ने रंजीत शीट को लेकर एक समिति गठित की। इस प्रकार कल्याण आश्रम का शुभारंभ हुआ। गौतम नियोगी, बुद्धदेव राहा और मदन मित्र प्रारम्भिक दौर के शिक्षक थे। इसके बाद 1982-84 के दौरान रामप्रसाद दे वीरभूम से सपरिवार आश्रम कार्य हेतु रावतोड़ा पधारे। इसी समय से कल्याण आश्रम के लिए निज भवन हेतु जमीन की खोज शुरू हुई। समिति के सदस्य नवकुमार मण्डल और रंजीत सीट के सहयोग से इसी गाँव के शबर पाड़ा में स्वर्गीय निवारण ग्राम अपनी तीस शतक जमीन सन् 1984 में कल्याण आश्रम को दान कर दिया। पहले कुआँ खुदाई फिर धीरे-धीरे छात्रावास का निर्माण किया गया। सन् 1986-87 सह संचालक के रूप में शीतेश साहा महोदय ने पूर्णकालीन जिम्मेदारी निभाई। इस के बाद जनसेवा के लिए छात्रावास के अलावा निःशुल्क चिकित्सा (होम्योपैथिक) की शुरुआत की गयी। डाक्टर के रूप में डॉ परिमल माइति, डॉ बिजय हेम्ब्रम, डॉक्टर नरेश चन्द्र नाग, डॉक्टर माघव चन्द्र माइति ने अपनी अमूल्य सेवा प्रदान की, जिसके बल पर कल्याण आश्रम का प्रचार-प्रसार होता चला गया। डॉक्टर नरेश चन्द्र नाग का समय (2005-2015) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वह उच्च माध्यमिक विद्यालय के अवसर प्राप्त शिक्षक थे जिन्होंने जंगल महल के गाँव-गाँव में चिकित्सालय खोले।

सन् 1981 में स्वर्गीय धीरेन्द्र नाथ मण्डल के घर बसन्त बाबू द्वारा जो बीज (कल्याण आश्रम) रोपा गया, वह अब विशाल बरगद का रूप धारण कर चुका है। इसके पीछे आश्रम के मानद सदस्यों की विशेष भूमिका रही है जो निम्न लिखित हैः-

माननीय रंजीत शीट

माननीय नटवर माइति

माननीय गणेश दास

स्वर्गीय नव कुमार मण्डल

कल्याण आश्रम के पूर्णकालीन सदस्य हैंः-

श्री रामप्रसाद दे — श्री दिलिप माइति
श्री शीतेश साहा — श्री जानकी हेम्ब्रम
श्री गौतम नियोगी — श्री नरेश चन्द्र नाग
श्री बुद्धदेव राहा — श्री मनोरंजन भट्टाचार्य
श्री गनेन बिसरा — श्रीकृष्ण चरण माइति
श्री अनिल माइति — श्री रंजीत कुमार
श्री जोगेश्वर सिंह — श्री नेपाल सिंह सरदार
श्री मुरलीधर सिंह पहाड़िया — श्री शक्तिपद माइति
श्री निरांजन कुमार — श्री निशापति कुण्डू
श्री परीक्षित माइति — श्री चितरंजन माइति
श्री सागर माइति — श्री उत्तम माइति

और अन्य सदस्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

रावतोड़ा कल्याण आश्रम में अब तक 212 छात्र

छात्रावास का लाभ लेकर समाज में अपना योगदान प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में 37 छात्र छात्रावास का लाभ उठा रहे हैं। छात्रावास में शिक्षा प्राप्त कर चुके छात्र वनवासी समाज के उत्थान में अपना योगदान दे रहे हैं और खुद को प्रतिष्ठित किया है।

छात्रावास से शिक्षा लाभ कर निकले श्री श्रीपति टुडू, सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हैं। श्री शुकदेव टुडू, श्री मोहित टुडू, श्री अजित सोरेन, श्री शैलेन बसेरा हाई स्कूल के शिक्षक हुए हैं।

वर्तमान में छात्रावास के माध्यम से वनवासी समाज में शिक्षा का प्रसार हुआ है। समाज के लिए शिक्षा स्वास्थ्य, निज-धर्म व सांस्कृतिक विरासत के सम्बन्ध में चेतना और विश्वास जगा है। सामाजिक समरसता बढ़ी है।

अनुवादक :

संगीता असोपा, संयोजिका, दक्षिण हावड़ा समिति ■

अनुकरणीय

- कुसुम सरावगी, हावड़ा महानगर महिला प्रमुख

● संवेदनशील कार्यकर्ताओं को पारिवारिक मंगल प्रसंगों के अवसर पर वनवासी बंधु का सहज स्मरण हो आता है। आदरणीय संदीप जी और रितु जी ने अपने परिणय की रजत वर्षगाँठ परिवार जनों के साथ तो खूब धूमधाम से मनाई किंतु इस मंगल अवसर पर उन्होंने अत्यंत आदरपूर्वक रक्त-बंधु वनवासी का स्मरण करते हुए 25,000 की राशि उनके सर्वांगीण विकास हेतु पूर्वांचल कल्याण आश्रम को प्रदान की। कल्याण आश्रम परिवार आपके सुखद दांपत्य की कामना करते हुए आपकी उदारता और आत्मीय सहयोग हेतु कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

● हावड़ा महानगर के मंत्री श्री मोहन लाल जी गर्ग ने अपने परिणय दिवस की 50वीं वर्षगाँठ के अवसर पर 51,000 रुपये की धनराशि विभिन्न प्रकल्पों कल्याण आश्रम,गोशाला और अपने गाँव में चल रहे विद्यालय को भेंट की। मोहनलाल जी गर्ग सभी कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणापुंज हैं। उनका यह कदम हम सभी के लिए प्रेरणादायक है।

कल्याण आश्रम परिवार आप दोनों के स्वस्थ और सुखमय जीवन की मंगलकामना करता है। ■

अमृत वचन

अच्छी चीज कहीं से भी मिले, स्वीकार करनी चाहिए। बुरी चीज कहीं भी हो उसका परित्याग करना चाहिए।

- आचार्य महाश्रमण

पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता-हावड़ा का 42वाँ वार्षिक उत्सव

वनवासी संस्कार सनातन का आधार स्तम्भ है : सत्येंद्र सिंह

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, कार्यकर्ता, अलीपुर समिति

वनवासी समाज के सर्वागीण विकास में पिछले 72 वर्षों से रत पूर्वांचल कल्याण आश्रम, कोलकाता-हावड़ा महानगर का 42वां वार्षिकोत्सव कला मंदिर में संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम रानी दुर्गावती पर केंद्रित था। रानी दुर्गावती गोंड जनजाति की रानी थीं। उनकी 500वीं जन्म जयंती पर अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा सभी राज्यों में उत्सव मनाया जा रहा है। कार्यक्रम के प्रधान वक्ता अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के अध्यक्ष सत्येंद्र सिंह ने कहा कि भारत की संस्कृति अरण्य संस्कृति है। इसके देवता शिव हैं। शिव की संस्कृति ही वनवासी संस्कृति है और बनवासी संस्कृति ही सनातन संस्कृति है। वनवासी संस्कार सनातन का आधार स्तम्भ हैं। जनजाति समाज आकाश जैसा विशाल हृदय वाला, अग्नि के समान तेजोमय, वायु जैसा गतिमान, पृथ्वी जैसा धैर्यशील, पहाड़ी झरने के समान पवित्र है। वनवासी समाज इष्ट देवता की पूजा के साथ शास्त्रों में वर्णित पंचभूत एवं पंचतत्वों की पूजा करते हैं। धार्मिक रूप से वह शहरी समाज से बहुत आगे हैं। डिमासा जनजाति से जुड़े हुए घटोत्कच और बर्बरीक के बलिदान को याद दिलाते हुए आपने कहा कि बलिदान करने वालों का संरक्षण और सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। अंग्रेजों ने सनातनी समाज को खंडित करने की दृष्टि से वनवासी को आदिवासी नाम दिया और उन्हें भारत की मूलधारा से अलग करने की चेष्टा की जिससे वनवासी समाज की बहुत क्षति हुई। समारोह के अध्यक्ष, प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी रतन लाल गाडिया ने कहा कि वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य किसी तपस्या से कम नहीं है। उन्होंने कहा कि संगठन की गतिविधियाँ प्रेरणादायक हैं। समाज द्वारा आर्थिक सहयोग जितना प्रमुख है समय-दान भी उतना ही महत्वपूर्ण है। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार बाबा सत्यनारायण मौर्य ने सांस्कृतिक कार्यक्रम **दुर्गा से दुर्गावती - एक अनवरत संघर्ष यात्रा** की अनूठी प्रस्तुति दी।

अपनी सुप्रसिद्ध शैली में, चित्रांकन, गीतों एवं संवादों से सुसज्जित उनकी इस प्रस्तुति ने सभी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। वीरांगनाओं की गाथाओं से समस्त दर्शकदीर्घा शौर्य और ऊर्जा के भाव से भर गयी। भारत माता, मां दुर्गा और रानी दुर्गावती का चित्रांकन करके इस भाव को उन्होंने द्विगुणित कर दिया। उन्होंने बताया कि मुगलों के हाथों में पड़ने की जगह आत्मबलिदान जैसा असंभव कृत्य रानी दुर्गावती ने किया। विभिन्न धर्मों एवं संस्कृतियों की चर्चा करते हुए बाबा मौर्य ने कहा कि सनातन संस्कृति मनुष्य को पाप की संतान नहीं वरन अमृतपुत्र मानती है। संचालन श्रीमती स्नेहलता बैद ने किया। उद्बोधन गीत शिवपुर समिति की महिलाओं ने तथा वन्दे मातरम गीत सुश्री तनुश्री मल्लिक ने गाया। संदीप चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। ■

प्रीतिलता छात्रावास

- महादेव गडाइ, पूर्व क्षेत्र शिक्षा आयाम प्रमुख, वनवासी कल्याण आश्रम

पश्चिम बंगाल में एक जिला है दक्षिण 24 परगना। इसके पूर्व में बांग्लादेश, पश्चिम में कोलकाता, उत्तर में उत्तर 24 परगना, दक्षिण मे गंगा सागर जिला में आता है सुंदरवन, विश्व का सबसे बड़ा वादावन (Mangrov forest)। यहाँ पर ज्यादा से ज्यादा नदी और द्वीप ही हैं।

कृषि, मछली-पालन और नदी से मछली शिकार, जंगल से शहद संग्रह, श्रमिक, पर्यटन का व्यवसाय यहाँ के लोगों की आजीविका है। ज्यादा गरीबी के कारण यहाँ के अधिकतर लोग विस्थापित होकर अन्य राज्य में चले गए। घर-घर में बुजुर्ग और बच्चे रहते हैं। इसी अवसर का फायदा उठाकर, काम में लगाने का लोभ देकर दलाल लोग गाँव की छोटी-छोटी लड़कियों (10-13) को नौकरी और पैसे का लोभ दिखाकर गाँव से दूर अनजानी जगहों पर लेकर भाग जाते हैं। अनेक बार ये समाचार अखबारों में भी प्रकाशित हुए। इस संवाद को पढ़कर कल्याण आश्रम के एक कार्यकर्ता का मन बहुत उद्विग्न हो गया। उसे लगा कि इस जगह के लिए कुछ करना है। इसी इच्छा को मन में रखकर कार्यकर्ता ने वहाँ आना-जाना शुरू किया। 2009 साल के अक्टूबर माह से.कार्यकर्ता के साथ संघ के कुछ स्वयंसेवक जुड़ गए (श्री अमल मुंडा, श्री प्रदीप सरदार, श्री मदन उरांव और भी कुछ स्वयंसेवकों का सहारा लेकर 2010 के नवंबर माह में एक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। बहुत से खिलाड़ियों के साथ सम्पर्क हुआ।

खेल प्रतियोगिता से संघ के स्वयंसेवक श्री श्यामल महतो और श्री संजय सिन्हा (प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक) के साथ सम्पर्क हुया।

धीरे-धीरे सम्पर्क बढ़ता रहा। सम्पर्क सूत्र को आधार कर दिसम्बर 2010 में सोनाखाली में कल्याण आश्रम कार्यालय के लिये एक कमरा लिया गया। तत्कालीन प्रान्त संगठन मन्त्री श्री चक्रधर सोरेन जी ने, श्री मथुर चन्द्र सरदार (एक पूर्णकालिक कार्यकर्ता) को दक्षिण 24 परगना जिला संगठन मन्त्री के रूप में भेज दिया। मथुर चन्द्र सरदार जी सोनाखाली में रहकर कल्याण आश्रम का काम करने लगे। श्यामल दा अधिक समय देकर काम में लग गए। 2011 में कोलकाता-हावड़ा महानगर से वनयात्रा हुई। दक्षिण बंग प्रान्त समिति ने वहाँ की समस्या को सुनकर कुछ करने की इच्छा व्यक्त की। गरीबी और मानव-व्यापार के कारण शिक्षा ठीक नहीं थी। इस विषय को सोचकर प्रान्त समिति ने निर्णय लिया कि यहाँ एक बालिका छात्रावास बनाया जाएगा। इस निर्णय के वाद वहाँ के सम्पर्कित व्यक्तिगण ने गोसाबा के वेलतलि गाव में श्री शम्भु दास के मकान में बाँस द्वारा निर्मित चार कमरा ले लिया।

उसी कमरे में पहली जनवरी सन 2012 में 12 छात्राओं को लेकर प्रान्त संगठन मन्त्री श्री चक्रधर सरेन जी की उपस्थिति में छात्रावास शुरु हुआ। श्री श्यामल महतो और उनकी भांजी रत्ना महतो को छात्रावास संचालन करने का दायित्व दिया गया। दो माह बाद एक पूर्णकालिक कार्यकर्ता सुश्री रेवती मण्डल को छात्रावास संचालन के लिए भेजा गया। छात्रावास का नाम रखा प्रीतिलता छात्रीनिवास। सहयोग के लिए उत्तर बंगाल रायगंज मातंगनि छात्रीनिवास की पूर्व छात्रा सुश्री गोलापि मारडि, पुरुलिया निवेदिता छात्रीनिवास की पूर्व छात्री सुश्री हेमलता हेम्ब्रम आई। छात्रीनिवास को केन्द्र करके एक ब्लॉक समिति गठित हुई, संगठन मन्त्री के रूप में श्री श्यामल महतो रहे। उसमें श्री परेश मंडल, श्री संजय मंडल, श्री सिद्धेश्वर वैद्य, श्री वकुल गायेन, श्री किनुराम सरदार, श्री संजय सिन्हा शामिल थे।

क्षेत्र संगठन मन्त्री स्वर्गीय डा. रामगोपाल गुप्ता, प्रान्त सचिव श्री शंकरलाल अग्रवाल, प्रान्त अध्यक्ष श्री विश्वनाथ विश्वास उनके पत्नी श्रीमती अनिता विश्वास महोदया, स्वर्गीय गजानन वापट महाशय अधिकारीगण का प्रवास हुआ।

प्रवास के दौरान फिर प्रान्त समिति ने निर्णय लिया कि वेलतलि में स्थायी छात्रीनिवास के लिए जमीन खरीदी जाएगी।

प्रान्त समिति निर्णय के वाद गोसाबा ब्लॉक समिति जमीन खोजने लगी। इधर छात्रीनिवास में छात्राओं की संख्या में बढोत्तरी हो रही थी। 2013 में 16 हो गई। 2012-14 तक वेलतलि में दो मेडिकल कैम्प हुए। समिति के लोग और स्थानीय लोग बहुत उत्साहित हुए। 2015 में छात्रीनिवास का छात्रा संख्या 22 हुई। इसी साल में 16 दिसम्बर वेलतलि गांव में साढ़े चार बीघा जमीन कल्याण आश्रम ने खरीद ली। 2016, 1 जनवरी को अस्थायी मकान निर्माण कर किराए के घर में चलने वाले छात्रीनिवास को यहाँ ले आए।

उस समय छात्राओं संख्या थी 22। और दो कार्यकर्त्री सुश्री प्रीतिलता छात्रीनिवास में भेज दी गई। संजय सिन्हा जी की धर्मपत्नी श्रीमती अल्पना सिन्हा छात्रीनिवास की छात्राओं को नृत्य की शिक्षा देने के लिए आती थीं।

छात्राओं की बढ़ती संख्या और गाँववालों के उत्साह को देखकर प्रान्त समिति ने छात्रीनिवास के लिए नया मकान बनाने का निर्णय लिया। स्वर्गीय सत्यनारायण केजरीवाल के ऊपर नया छात्रीनिवास बनाने का जिम्मा दिया गया। सत्यनारायण जी भवन

निर्माण काम को आगे बढ़ाने के लिए कोलकाता से बार-बार आना-जाना शुरु कर दिया। श्री निर्मल अग्रवाल आर्किटेक्ट को लेकर तीन-चार बार गए। भवन निर्माण कार्य तेज गति से चल रहा था। इसी समय एक मेडिकल कैम्प हुआ। छात्रीनिवास में भी हर साल छात्राओं की संख्या बढ़ती थी। 2016 में 27 हो गई। सातजेलिया, लाहिरीपुर, परशमणि, दयापुर, कचुखालि, गोसाबा, वासनति, सन्देशखालि द्वीप समूह से छात्राएँ आने लगी। द्वीप समूह से श्री दुर्योधन सिंसरदार, सुश्री सरस्वती सिंह को काम सँभालने के लिए प्रान्त से भेजा गया। छात्रीनिवास भवन निर्माण के लिए अनेक सज्जन और कम्पनियों ने आर्थिक सहयोग दिया। आर्थिक विषय का पूरा दायित्व कोलकता-हावड़ा महानगर कार्यकर्ताओं का था।

10 मार्च, वसंत पंचमी के दिन सन 2019 में एक शोभायात्रा के साथ, अखिल वनवासी कल्याण आश्रम के माननीय अध्यक्ष मा. जगदेव राम उरांव जी और भारत सेवाश्रम संघ के सन्यासी स्वामी शुभरूपाननद महाराज के करकमलों से प्रीतिलता छात्रीनिवास का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर उत्तर-दक्षिण 24 परगना जिला और कोलकाता महानगर से 4000 शुभानुध्यायी और कार्यकर्ता कार्यक्रम में उपस्थित रहे। वर्तमान में छात्रीनिवास में 78 छात्राएँ (कक्षा पाँचवीं में 17, छठी में 14, सातवीं में 11, आठवीं में 18, नवमी में 8, दसवीं में 5, ग्यारहवीं में 2, बारहवीं में 3) रहती हैं। 11 छात्राएँ दसवीं कक्षा और 11 छात्राएँ 12वीं कक्षा तक की पढ़ाई पूरी करके गईं।

मुंडा, भूमिज, वेदिया, लोहारा, ओराओ जनजाति की बच्चियाँ छात्रीनिवास भवन में रहती हैं। सुश्री लक्ष्मीमणि हँसदा, सुश्री सीमा सरदार, सुश्री उत्तरा महतो भी छात्रीनिवास संचालन के लिए पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में आईं।

कल्याण आश्रम द्वारा छात्रीनिवास तैयार होने के बाद वहाँ का जनजाति समाज अपने समाज और धर्म के जागरण के लिए आगे आया। शिक्षा और समाज सुरक्षा के लिए जागरण होने से मानव व्यापार और तस्करी कम हो गई। 5 छात्राएँ छात्रीनिवास से संस्कार लेकर परिवारों में संस्कार दे रही हैं। अभी छात्रीनिवास को केन्द्र करके 74 गाँव में 74 शिशु शिक्षा केन्द्र चल रहे हैं। वर्षा के जल संरक्षण के लिए 100 जल पोखर का निर्माण हुआ। छात्रीनिवास में स्वावलंबन के लिए एक सिलाई केन्द्र चल रहा है। वहाँ पर 50 महिलाएँ प्रशिक्षण ले रही हैं। एक जिला समिति, एक ब्लॉक समिति, एक छात्रीनिवास संचालन समिति बनी। छात्रीनिवास और जिला काम संचालन के लिए श्री श्यामल महतो, सुश्री सरस्वती सिंह पातर, सुश्री ममता हंसदा, सुश्री उत्तरा सिंह, सुश्री लक्ष्मीमणि हेम्ब्रम छात्रीनिवास में रहते हैं। प्रान्त सह छात्रावास प्रमुख सुश्री मालती सोरेन का केन्द्र छात्रीनिवास पर है। वर्तमान में बीच-बीच में वनयात्रा, मेडिकल कैम्प, होता रहता है। बहुत जगह से शुभानुध्यायी और कार्यकर्ता सालभर आना-जाना करते हैं।

इस प्रकार एक बीज छात्रावास के वृक्ष में परिणत हुआ। इस वृक्ष के पुष्पित पल्लवित होने में त्याग, समर्पण और ध्येयनिष्ठा का अप्रतिम योगदान है। जनजाति समाज के विकास के लिए हमारे बीच प्रीतिलता छात्रावास प्रकाश-स्तम्भ के रूप में है। लिखने के लिए और भी है, परंतु त्याग समर्पण और दृढ़संकल्प को कभी भी शब्दों में बाँधा नहीं जा सकता है। ■

जन-पर्व मकर संक्रांति

- अनीता बूबना, कोलकाता महानगर वस्तु प्रमुख

मकर संक्रांति हिंदू परंपरा में विशेष महत्व रखता है। भारतीय सौर पंचांग के अनुसार, इस दिन सूर्य मकर राशि (कुम्भ) में प्रवेश करता है, जिसे उत्तरायण कहा जाता है। यह दिन ज्योतिषीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि सूर्य के मकर राशि में प्रवेश के साथ सकारात्मक परिवर्तन, समृद्धि और नए विकास का भी संकल्प लिया जाता है। मकर संक्रांति जैसे पर्व संगठन के लिए एक साथ आने और समुदाय की भावना को मजबूत करने का अवसर प्रदान करते हैं। यह त्यौहार संगठन के सदस्यों को एक साथ काम करने और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। संगठन के मूल्यों और संस्कृति को बढ़ावा देने का अवसर भी मकरसंक्रांति का पावन पर्व प्रदान करता है। कोई भी संगठन अपने संग्रह के दृष्टिकोण से ही आगे प्रगतिमान होता है। प्रतिवर्ष पूर्वांचल कल्याण आश्रम भी इसी पवित्र दिन को सम्यक संग्रह के लिए चुनता है। यह पर्व संगठन के भीतर सकारात्मकता और आशावाद को बढ़ावा देता है। प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी कल्याण आश्रम ने मकर संक्रांति के दिन को ही वस्तुसंग्रह, व्यक्ति संग्रह और धनसंग्रह के लिए मकर संक्रांति को चुना। मकर संक्रांति पर्व खगोलीय घटना है। अंधकार पर प्रकाश के विजय का प्रतीक है। क्रांति में केवल परिस्थिति परिवर्तन की आकांक्षा होती है जबकि संक्रांति में सम्यक् परिस्थिति स्थापन करने की अभिलाषा होती है। इसके लिए केवल संदर्भ ही नहीं अपितु मानव मन के संकल्पों को भी बदलना होता है। यह कार्य विचार क्रांति से ही संभव है। जैसे-जैसे सूर्य की किरणें आसमान में अधिक समय तक रहती हैं, वैसे-वैसे मकर संक्रांति की भावना भी उन लोगों के दिलों में बनी रहती है जो इसके उत्सव में भाग लेते हैं। यह एक ऐसा समय है जब समुदाय भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार करते हुए एक साथ आते हैं, और सामूहिक रूप से पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं का गर्मजोशी का आनंद लेते हैं। इस त्यौहार का सार न केवल अनुष्ठानों में निहित है, बल्कि यह एकजुटता की भावना में भी निहित है, जो हमें संस्कृतियों की विविधता की याद दिलाती है जो भारत को अद्वितीय बनाती है।

प्रत्येक राज्य मकर संक्रांति को अनोखे रीति-रिवाजों और परंपराओं के साथ मनाता है, जिससे यह त्यौहार एक ऐसे धागे में बदल जाता है जो राष्ट्र की सांस्कृतिक ताने-बाने को जटिल रूप से बुनता है। यह विविधता शक्ति का स्रोत बन जाती है, जो भारत के ताने-बाने को बनाने वाले विविध समुदायों के बीच अपनेपन की भावना को बढ़ावा देती है।

इसी क्रम में कल्याण आश्रम मकर संक्राति के पर्व को संग्रह क्रांति के रूप में मनाता है। कोलकाता हावड़ा महानगर में सम्यक कार्यसंचालन के लिए 45 समितियों में विभाजित है। मकरसंक्रांति के आगमन के पूर्व ही कल्याण आश्रम के समर्पित कार्यकर्ताओं की बैठकें की जाति है। इन्हीं के निर्देशन में मकर संक्रांति शिविर संरचना होती है।

कोलकाता हावड़ा महानगर की समितियाँ अपने अपने शिविरों की रूपरेखा बनाकर मकरसंक्राति के उत्सव पर प्रात:काल ही स्थान स्थान पर अपने कैम्प लगाकर बैठ जाती है।

इस वर्ष पिछले वर्ष की तुलना में 14 नए शिविर लगे। कुल मिलाकर 118 शिविर लगे। मकर संक्राति शिविर का लक्ष्य होता है समाज के लोगों को अपनी विचार धारा से जोड़ना। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए 24 नवंबर से 12 जनवरी तक 130 बैठकें हुईं। 118 शिविर में 380 कार्यकर्ता और 456 सहयोगी मित्रों से मिलकर यह शिविर कुम्भ परिपूर्णता को प्राप्त हुआ ।

वनवासी भाई-बहनों के विकास कार्य से प्रत्येक नगरवासी को व्यक्ति संग्रह की धवलमाला में पिरोने का कार्य किया गया। मकर संक्रांति के त्यौहार के दौरान लोग प्रकृति के उपहार के लिए आभार प्रकट करते हैं, यह सांस्कृतिक विविधता का उत्सव है और हमारी साझा पहचान की पुष्टि है। मकर संक्रांति का महत्व विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं और परंपराओं के लोगों को एकजुट करने की इसकी क्षमता में निहित है, जिससे एकता की भावना पैदा होती है जो राष्ट्र के सामूहिक ह्रदय में गहराई से गूंजती है। यही हमारा लक्ष्य है और यही हमारा स्पंदन है।

शिविर की सफलता पर बस यही कह सकते हैं कि-

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती। ■

शैक्षिक भ्रमण का अभिनंदन

- मोहनलाल गर्ग, मंत्री हावड़ा महानगर

कर लूं अभिनंदन जीवन के पथ पर जो चंदन से घिस जाने को तत्पर,
जो चले थे पथ पर प्रेम भाव का प्रज्वलित दीप लिए।
दीप पुंज से प्रज्वलित होकर आभा को थे फैलाते'
जिनके कीर्ति का होता यशोगान, उनका अभिनंदन।

शैक्षिक भ्रमण या क्षेत्र यात्रा, छात्रों के एक समूह द्वारा नियमित शिक्षण वातावरण से बाहर की जाने वाली यात्रा है। यह एक समग्र शिक्षा का अहम हिस्सा है। इसका मकसद छात्रों को वास्तविक दुनिया का अनुभव कराना होता है। इससे उन्हें कक्षा में पढ़ाए गए विषयों को समझने में मदद मिलती है। छात्रों को कक्षा के बाहर कुछ नया सीखने का मौका मिलता है।

इसी ध्येय की प्रतिपूर्ति के लिए सरस्वती शिशु विद्या मंदिर गाइन प्रखण्ड गाऊ जिला लातेहार से 30 भैया बहन आचार्य 9 श्रद्धाजागरण समिति के 6 सदस्य कोलकाता भ्रमण के लिए पहुँचे। भ्रमण दल के इन सदस्यों के अभिभावक और पालक बना श्री राम सेवा समिति ट्रस्ट हावड़ा। ट्रस्ट ने पूरे मनोयोग से भैया बहनों के आवास - भोजन तथा भ्रमण की पूरी व्यवस्था निशुल्क करने का दायित्व लिया और उसे सँभाला भी। एक विचार परिवार के मुखिया बनकर समिति ने राष्ट्र के भावी नागरिकों को यह संदेश भी दिया -

हाथ थामना जरूरी है....
फर्क नहीं पड़ता कि आगे तुम चलो या मैं...
साथ होना जरूरी है....
फर्क नहीं पड़ता कि तुम मुझे सम्भालो या मैं तुम्हे...। ■

बोधकथा

सोच की ताकत

एक बार एक राजा के दरबार में एक बूढ़ा ज्ञानी आया। ज्ञानी के मुख पर अद्भुत तेज था। राजा ने उनका हृदय से स्वागत किया। राजा ने उनसे पूछा जीवन में सफलता और विफलता का सबसे बड़ा कारण क्या है? ज्ञानी मुस्कुराए और राजा को दो बीज दिए उन्होंने कहा 'एक बीज को बगीचे में बो दो और दूसरे को एक गमले में।' राजा ने वैसा ही किया।

कुछ समय बाद बगीचे का बीज एक विशाल वृक्ष बन गया जबकि गमले का पौधा छोटा ही रह गया। राजा ने ज्ञानी से इसका कारण पूछा। ज्ञानी बोले- 'गमले की सीमाएँ पौधे को बड़ा होने से रोक रही थी लेकिन खुले मैदान में वृक्ष को बढ़ने की पूरी स्वतंत्रता मिली।'

उन्होंने आगे समझाया 'ठीक वैसे ही जब हम अपनी सोच को सीमित कर लेते हैं और नकारात्मक विचारों से बंधे रहते हैं तो हम कभी आगे नहीं बढ़ पाते लेकिन जब हम अपनी सोच को बड़ा और सकारात्मक बनाते हैं तो सफलता हमारे कदम चूमती है।'

राजा को समझ आ गया कि असली बाधा परिस्थितियाँ नहीं बल्कि सोच की सीमाएँ होती है। जिनकी सोच सकारात्मक और चिन्तन विराट होता है वे प्रत्येक प्रतिकूल परिस्थिति में मार्ग निकाल लेते हैं। संकीर्ण सोच के व्यक्ति बाह्य परिस्थितियों को अपनी असफलता का कारण मान अपनी प्रगति की राह अवरुद्ध कर लेता है। ■

कविता

नूतन संवत्सर का करें स्वागत

- सुरेश चौधरी

प्राची का अम्बर भी देखो आज केशरिया घुला है,
नव वर्ष है नवल पल्लव है हृदय नवल पुष्प खिला है।
हवाएं मदिर मोहक मंगल गीत गा रहीं है आज,
इस देवभूमि पर देवत्व अमृत बरसा रहीं हैं आज।।

आओ हम सब मिल नूतन संवत्सर का करें स्वागत,
प्रभु विश्व संकट का हो समापन हैं तेरी शरणागत।
महि पर पुनः भारत देश को वही गुरु मान मिला है,
नव वर्ष है नवल पल्लव है हृदय नवल पुष्प खिला है।।

नव चेतन, नव उजास, नव कल्पना लेकर आया नव वर्ष,
छोड़ विगत की कलुषता कटुता, नव उमंग लाया नव वर्ष।
उठो उठो भारत वीर नव संवत्सर ऐसा मनाएंगे,
चरित्र निर्माण ध्येय संग वैदिक स्वाभिमान जगायेंगे।।

संस्कार ज्योति से अंतस आलोकित करना है हर मन का,
परिमार्जित ध्येय से प्रभरणित रोम रोम करना है तन का।
नव वर्ष शुभांक हो मंगल गावें वन्दन प्रीत बढ़ाएं,
प्रेरणा अभिलाषित हो सर्वहित हेतु मन मुदित बनाएं।। ■

अमृत वचन

मनुष्यता ने जितने सपने देखे हैं उनमें राम सबसे सुंदर सपना है, सबसे प्यारा सपना है।

- डॉ कुमार विश्वास

सामूहिक विवाह कार्यक्रम 2025

इकसठ वनवासी जोड़ों का, शुभ विवाह संस्कार कराया।
दंपत्तियों की मुहर लगाकर, सामाजिक सम्मान दिलाया।।

मकर संक्रान्ति कैम्पों की झलकियाँ

महानगर में संक्रांति पर जगह-जगह पर शिविर लगे थे।
कार्यप्रणाली लख कर सबकी, सहाय जी भी प्रसन्न हुए थे।।

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone: +91 33 2268 0962, 4803 4533
E-mail: kalyanashram.kol@gmail.com